GURUIGNOU.COM

B.H.D.L.A.-135

हिन्दी भाषा : विविध प्रयोग

Disclaimer/Special Note: These are just the sample of the Answers/Solutions to some of the Questions given in the Assignments. These Sample Answers/Solutions are prepared by Private Teacher/Tutors/Authors for the help and guidance of the student to get an idea of how he/she can answer the Questions given the Assignments. We do not claim 100% accuracy of these sample answers as these are based on the knowledge and capability of Private Teacher/Tutor. Sample answers may be seen as the Guide/Help for the reference to prepare the answers of the Questions given in the assignment. As these solutions and answers are prepared by the private Teacher/Tutor so the chances of error or mistake cannot be denied. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing these Sample Answers/ Solutions. Please consult your own Teacher/Tutor before you prepare a Particular Answer and for up-to-date and exact information, data and solution. Student should must read and refer the official study material provided by the university.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। दस अंक के प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में तथा पाँच अंक के प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। शेष प्रश्नों के उत्तर, दिए गए निर्देशों के आधार पर दीजिए।

भाग–1 (इकाई 1 से 4 पर आधारित)

प्रश्न 1. देवनागरी लिपि के लेखन में आने वाली कठिनाइयों की उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

उत्तर–देवनागरी लिपि

वर्णों का मानक रूप

आपने देखा कि कई वर्ण दो प्रकार से लिखे जाते हैं। हिन्दी का क्षेत्र अत्यंत विशाल है। इस कारण कुछ वर्णों के लेखन में विविधता का होना स्वाभाविक है; जैसे–

आना	घोना	भागना	खाना	दूना
आना	धोना	मागना	रवाना	छूना

लेकिन इससे मुद्रण में कठिनाई होती है। लोगों को सीखने-सिखाने में भी कठिनाई होती है। टंकण-यंत्र (टाइप मशीन) का निर्माण असंभव हो जाता है। इसी कारण भारत सरकार ने केंद्रीय हिन्दी निदेशालय को मानक देवनागरी लिपि निर्धारित करने का कार्य सौंपा। इसका उद्देश्य यह था कि हम निश्चित करें कि आगे से कौन-कौन से वर्ण मानक होंगे और कौन-कौन से अमानक। इसका उद्देश्य था कि लोग मानक वर्णों का ही प्रयोग करें, जिससे भाषा में एकरूपता आये। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने 1966 में मानक देवनागरी लिपि निर्मित की।

हिन्दी निदेशालय के निर्धारित मानक वर्ण–

अ ऋ ख छ झ ण ध भ ल श

यहां हम मानक देवनागरी वर्णमाला दे रहे हैं–

स्वर: अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्राएं: ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

अनुस्वार: (अं)

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

विसर्गः (अः)

व्यंजनः	क	ख	ग	घ	ङ
	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	प	फ	ब	भ	म
	य	र	ल	व	
	श	ष	स	ह	
संयुक्त व्यंजनः	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र	

लेखन संबंधी कठिनाइयां

निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए–

पद्मा, उद्यान, द्वारा, उद्देश्य, उद्धार, उद्गार।

इन शब्दों में दो व्यंजनों को आपस में जोड़कर लिखा गया है; जैसे–'द्म' दो वर्णों का योग है–द् + म। इन दोनों के मिलने से एक तीसरा रूप बन जाता है। मानव वर्तनी द्वारा इनका सरलीकरण किया गया, जैसे–आगे के शब्दों को देखिए–

पद्‌मा, उद्‌यान, द्वारा, उद्‌देश्य, उद्‌धार, उद्‌गार। हमने यहां हलंत (्) चिह्न का प्रयोग किया, जिससे छह तरह के संयुक्त वर्णों के लेखन से बचे गये। 'द्म' (या द्‌म) संयुक्त वर्ण कहलाते हैं। हिन्दी निदेशालय ने संयुक्त वर्ण बनाने के संबंध में भी अपने कुछ सुझाव दिये हैं। इससे लेखन-विधि, मुद्रण आदि सरल हो जाते हैं।

संयुक्त वर्ण बनाने की विधि–सबसे पहले हम यह कहेंगे कि पुराने वर्णों अर्थात अमानक वर्णों से संयुक्त वर्ण नहीं बनेंगे, इसलिए मुख्य, पुराय, सभ्य, विश्व, मल आदि का रूप अमानक होगा।

नये (मानक) वर्णों से संयुक्त व्यंजन बनाने के संदर्भ में तीन बातें हैं–

(क) र् ऋ के रूप पूर्ववत् होंगे अर्थात इनसे बनने वाले संयुक्त व्यंजनों में कोई परिवर्तन नहीं होगा; जैसे–क्रम, श्रम, तर्क, ड्रामा, बर्र, रुपया, रूप, हृदय, शृंगार। एक अपवाद है 'दृ' जो पूर्व रूप 'ड' के स्थान पर आता है।

(ख) आप निम्नलिखित वर्णों को देखिए और उसमें समान तत्त्व पहचानिए–

क्ष स श व ल य

सबके अंत में एक खड़ी पाई है। उसे निकाल दीजिए और उसके स्थान पर दूसरा वर्ण रख दीजिए, यह संयुक्त वर्ण बन गया। उदाहरण देखिए–मुख्य, ग्यारह, विघ्न, प्राच्य, राज्य, पुण्य, पत्ता, तथ्य, ध्यान, न्याय, प्यार, ब्याह, अभ्यास, म्यान, मल्ल, द्रव्य, श्याम, शिष्य, स्याही, लक्ष्य।

(ग) अब वर्ण क और फ से संयुक्त वर्ण बनाने के लिए इनकी आखिरी रेखा थोड़ी काट दें, तो संयुक्त वर्ण बन जाएंगे; जैसे–क, फ – मुक्त, हफ्ता।

(घ) अब कुछ वर्ण और बचे हैं।

छ ट ठ ड ढ द ह

हलंत चिह्न लगाकर इनके संयुक्त वर्ण बना सकते हैं; जैसे–उच्छ्‌वास, नाट्‌यशास्त्र, पाठ्‌यक्रम, धनाढ्‌य, पद्‌म, चिह्न।

वर्तनी

हिन्दी निदेशालय ने सलाह दी है कि पंचम वर्ण को उस वर्ग के पहले चार वर्णों से पहले अनुस्वार से दिखाया जाए; जैसे–न को त, थ, द, ध से पहले लिखा जाए–

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

मानक रूप अंत पंथ बंद अंधा

पूर्व रूप अन्त पन्थ बन्द अन्धा

इस तरह के अन्य कुछ उदाहरण भी देखे जा सकते हैं, जो अन्य नासिक्य व्यंजनों के साथ आते हैं–

संबंध हिंदी टंकण चंचल गंगा मंत्री

झंडा झंझा संभव पंछी संघ कंठी

इस पद्धति से भाषा में एकरूपता आएगी, लिखने में सरलता आएगी।

लेकिन आपको ध्यान रखना चाहिए कि नासिक्य व्यंजनों के बाद उस वर्ण के पहले चार वर्णों के अलावा और कोई कोई वर्ण आएगा, तो नासिक्य व्यंजन का आधार, रूप लिखा जाएगा, अनुस्वार नहीं। इस नियम के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के सही रूप और गलत रूपों को देखिए–

सही रूप		**गलत रूप**
पुण्य	ण् + य	पुंय
गन्ना	न् + न	गंना
साम्य	म् + य	सांय
निम्न	म् + न	निंन
सम्राट	म् + र	संराट

वर्तनी के कुछ नियम

शब्द का लिखित रूप उसकी 'वर्तनी' कहलाता है। इसी को हम 'हिज्जे' भी कहते हैं; जैसे–'किताब' सही वर्तनी है, 'कीताब' गलत वर्तनी है। हमें शब्दों को सही वर्तनी में लिखना चाहिए, तभी वाक्य का सही अर्थ निकलेगा; जैसे–''मैं फल खा रहा हूँ'' में 'फल' लिखेंगे, तो वाक्य निरर्थक होगा।

आपने देखा कि मानक वर्णमाला में हमने चंद्रबिन्दु (ँ) को नहीं दिखाया। निम्नलिखित दोनों शब्दों में वर्तनी में अंतर है, उच्चारण में अंतर है और अर्थ में अंतर है–

हंस–एक पक्षी, हँसना–एक क्रिया व्यापार

हमें दोनों के प्रयोगों को समझना होगा।

चंद्रबिन्दु (अनुनासिकता)–इसे चिह्न (ँ) से दिखाते हैं; जैसे–

हँसना, आँख, पूँछ, बूँद, दाँत, ऊँट, दायाँ, बायाँ, लड़कियाँ।

लेकिन जब अनुनासिकता को हम ऊपर वाले वर्णों के साथ लिखेंगे, तो उसे अनुस्वार (ं) से लिखते हैं; जैसे–

गेंद, ईंट, औंधा, गोंद, पैंसठ, कहीं, दोनों।

आपको अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ) के अंतर को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। अनुस्वार वर्णमाला के पंचमाक्षर ङ, ञ, ण, न, म के लिए प्रयुक्त होते हैं जबकि अनुनासिक नाक से निकलने वाली ध्वनि मात्र है। अनुस्वार के सभी रूपों के लिए मुद्रण-टंकण में प्राय: (ं) चिह्न का प्रयोग होने लगा है; जैसे– क्रांति (क्रान्ति), शांति (शान्ति)। लेकिन भांति, पांति को भान्ति', पान्ति भी लोग लिख देते हैं, जो गलत है।

वर्णमाला में हमने 'ड़' और 'ढ़' को भी नहीं दिखाया है, जबकि मुद्रित पुस्तकों में हर जगह इनसे बनने वाले शब्दों को इसी रूप में दिखाया जाता है।

आगे के विवरण देखिए–

ड–शब्द के आरंभ में–डालना, डोली, डूबना

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

व्यंजन गुच्छ में–खड्ग, कार्ड, गुड्डी

अनुस्वार के बाद–पंडित, कांड

उपसर्ग के बाद–नि + डर = निडर, बे + डौल = बेडौल

ड़–बीच में और अंत में, जैसे–

लड़का, पेड़, बड़बड़, लड़की, सांड़, जड़ता

इस नियम की जानकारी होने पर वर्तनी के दोष दूर किये जा सकते हैं। इसी नियम से ढ और ढ़ के लेखन को भी पहचान सकते हैं। अनुस्वार और अनुनासिक की तरह हिन्दी में ड़ और ढ़ को लेकर भी काफी भ्रम है। हिन्दी की ये नयी ध्वनियां हैं, जो 'ट' वर्ग के 'ड' और 'ढ' से निकली हैं। उच्चारण सही हो, तो वर्तनी भी ठीक होगी। यह हिन्दी भाषा की विशेषता है कि अधिकतर हम वही लिखते हैं, जो हम बोलते हैं, इसलिए ह्रस्व-दीर्घ स्वरों का उच्चारण सही करें, तो वर्तनी सही लिख सकते हैं। **दिन-दीन** में उच्चारण का अंतर है, **जाति-जाती** में उच्चारण का अंतर है। इन शब्दों के लिए कोई नियम देना संभव नहीं है। हां, शब्द-रचना में कुछ नियम ढूंढ़ सकते हैं; जैसे–

लकड़ी – लकड़ियां

भाई – भाइयों

लेकिन ऐसे नियम कम ही हैं। अत: इनके सही उच्चारण से ही वर्तनी सुधर सकती है।

भाषा में शब्द कई स्रोतों से आते हैं, वे अपने उच्चारण के साथ आते हैं। अगर आप शब्द के स्रोत को पहचान सकें, तो वर्तनी को निश्चित कर सकेंगे। हिन्दी में संस्कृत से आये शब्द आते हैं, जैसे–कार्य, रक्षा, अध्ययन, वास्तविक, उद्योग आदि। अरबी-फारसी स्रोत से आये (उर्दू के) शब्द हैं–मालूम, टेलीफोन नकल, उम्र, मदरसा आदि। अंग्रेजी से आये शब्द हैं–साइकिल, रेल, डॉक्टर, टेलीफोन आदि। अब हम इन शब्दों की वर्तनी की कुछ विशेषताओं की चर्चा करेंगे–

(1) केवल संस्कृत शब्दों में ऋ, ष, क्ष, ज्ञ, ण, विसर्ग (:) आदि वर्ण मिलते हैं, इसलिए उर्दू या अंग्रेजी शब्दों में क्ष नहीं आएगा, बल्कि 'क्श' आएगा; जैसे–रिक्शा, डिक्शनरी, नक्शा आदि। संस्कृत शब्दों में (जैसे–रक्षा, शिक्षित आदि में) 'क्श' नहीं आ सकता।

(2) केवल संस्कृत शब्दों में शब्द के अंत में ह्रस्व स्वर इ, उ आते हैं; जैसे–जाति, गति, तिथि, अस्थि, वायु, आयु आदि। किसी उर्दू या अंग्रेजी शब्द में अंत में ह्रस्व स्वर इ, उ नहीं आते।

(3) क़, ख़, ज़, फ़, ग़ अरबी-फारसी शब्दों में आते हैं। इसलिए बाक़ी, राज़ी, बाग़ी, गुफ़्तगू आदि दीर्घ अंतिम स्वर से ही लिखे जाएंगे। अंग्रेजी से आये शब्दों में ऑ, ज, फ, को देख सकते हैं; जैसे–डॉक्टर, ज़ू, (zoo) फ़ोन आदि।

(4) संस्कृत के कुछ शब्दों में अंतिम स्थान पर 'म' के उच्चारण के लिए अनुस्वार लिखा जा सकता है; जैसे–एवं, स्वयं, अहं, परं। अन्य शब्दों में हम 'म' के लिए अनुस्वार नहीं लिख सकते; जैसे–'मालूम' को 'मालूं' नहीं लिख सकते।

(5) कुछ शब्दों की सही और गलत वर्तनी को देखिए।

सही–उदधार, प्रत्येक, निर्जन, अस्वस्थ, सम्राट, नागरिक, जागरण, नरक।

गलत–उद्धार, प्रतयेक, निरजन, असवस्थ, समराट, नाग्रिक, जाग्रण, नर्क।

ये शब्द संस्कृत के हैं। आमतौर पर संस्कृत शब्दों में शब्दों के दो रूप नहीं मिलते। इनमें सही रूप को हम कुछ नियमों से स्पष्ट कर सकते हैं।

इसके विपरीत उर्दू तथा अंग्रेजी शब्दों में कई जगह वर्तनी के दो रूप मिलते है और दोनों सही माने जा सकते हैं; जैसे– शर्म/शरम, बिलकुल/बिल्कुल, बरतन/बर्तन, उमर/उम्र, खयाल/ख्याल, इनकार/इन्कार, सरकस/सर्कस, कालेज/कालिज, पाउडर/पावडर आदि। यहां हमारे पास उच्चारण या शब्द रचना का कोई आधार नहीं है, इसलिए हमें दोनों ही शब्दों को सही मानना होगा।

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

हिन्दी के अपने शब्दों में भी शब्द-निर्माण के आधार पर कुछ नियम बनाये जा सकते हैं; जैसे–उलट (ना) से 'उलटा' बना, यहां 'उल्टा' लिखना गलत है। इसी तरह भर (ना) से 'भरती', इसलिए 'भर्ती' उचित नहीं है। हिन्दी में 'चिठ्ठी' 'पथ्थर' जैसे शब्द गलत हैं, क्योंकि हिन्दी में ठ्ठ, थ्थ जैसे संयुक्त वर्ण नहीं आते। ऐसे कुछ नियमों के अध्ययन से हम सही भाषा लिखने की ओर प्रवृत्त हो सकेंगे। लेकिन जहां नियम नहीं बन सकते, हमें अपने उच्चारण की शुद्धता पर बल देना होगा।

प्रश्न 2. ध्वनियों से शब्द के निर्माण की प्रक्रिया स्पष्ट करते हुए हिंदी ध्वनियों की उच्चारणगत विशेषताएं बताइए।

उत्तर– ध्वनि के बिना शब्दों, पदों अथवा वाक्यों की कल्पना नहीं की जा सकती। किसी भी भाषा में ध्वनियों के महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। ध्वनियों का समूहन शब्द, पद, वाक्य यहां तक कि भाषा है। प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा में भी ध्वनियों का अध्ययन शिक्षा और प्रातिशाख्य के अंतर्गत किया गया है, जबकि भाषा विज्ञान में ध्वनियों का अध्ययन ध्वनि विज्ञान (Phonetics) के अंतर्गत किया जाता है।

ध्वनि विज्ञान अथवा स्वनविज्ञान को ध्वनियों के उत्पादन, संवहन और ग्रहण के आधार पर तीन शाखाओं–1. औच्चारिकी ध्वनिविज्ञान (Articulatory Phonetics), 2. भौतिकी ध्वनि विज्ञान (Acoustic Phonetics), 3. श्रौतिकी (Auditory Phonetics) में विभक्त किया गया है। औच्चारिकी ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत ध्वनि के उच्चारण से संबंधित अध्ययन किया जाता है। ध्वनियों का उच्चारण स्थान क्या है, किन-किन वाक् अवयवों का इसमें योग होता है, वायु किस रूप में ध्वनियों को उच्चरित करती है अर्थात् ध्वनियों के उत्पादन से संबंधित अध्ययन इस शाखा में किया जाता है। भौतिकी ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत ध्वनि के उच्चरित होने के पश्चात् ध्वनि वायु तरंगों के माध्यम से किस रूप में सभी के संपर्क में आती हैं अर्थात् वक्ता और श्रोता के बीच कैसे ये ध्वनियाँ पहुंचती हैं, इसका अध्ययन किया जाता है। ध्वनियों के संवहन से संबंधित अध्ययन ही इस शाखा का आधार है।

श्रौतिकी ध्वनि-विज्ञान के अंतर्गत ध्वनियाँ वायु तरंगों के माध्यम से हमारे कान तक पहुँचती हैं। इसके अंतर्गत ध्वनियों के सुनने से संबंधित अध्ययन किया जाता है। ध्वनियाँ कैसे हमारे कान के माध्यम से अंदर प्रविष्ट होती हुई हमारे तंत्रिका कोशिका (न्यूरोन) के माध्यम से हमारे मस्तिष्क तक पहुँचती हैं और सुनने वाला कैसे मस्तिष्क में स्थित पदार्थों और भावों के बिंब के माध्यम से बोलने वाले के भावों को समझ लेता है। इन सबका अध्ययन ध्वनि विज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत किया जाता है अर्थात् ध्वनियों के ग्रहण से संबंधित अध्ययन ही श्रौतिकी ध्वनि विज्ञान के मूल में है।

ध्वनियां और उच्चारण की विशेषताएं

ध्वनियां शब्द में अर्थ-भेद पैदा करती हैं। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हम दो ध्वनियों में उच्चारण के स्तर पर भी अंतर करें और सुनने वाला दो ध्वनियों के उच्चारण में अंतर को पहचाने। अगर 'क' और 'ख' दोनों का उच्चारण एक जैसा हो और सुनने वाला उन्हें एक ही तरह से सुने, तो 'काना' और 'खाना', 'कोना' और 'खोना', 'सका' और 'सखा' आदि शब्दों में अंतर नहीं कर पाएंगे। किंतु हम उच्चारण के इस अंतर को कैसे पहचानते हैं, इसके लिए वर्णमाला की ध्वनियों के उच्चारण को समझना आवश्यक है।

हिंदी की ध्वनियों का उच्चारण

स्वर जिह्वा के अगले भाग से ←		→ जिह्वा के पिछले भाग से		
मुंह कम खुला ई	इ		उ	ऊ
↑	ए		ओ	
↓	ऐ	अ	औ	
मुंह अधिक खुला			(ऑ)	
			आ	

यहां हमने यह ऋ को नहीं दिखाया है, क्योंकि यह पूर्ण रूप से स्वर नहीं है। यह 'रि' के समान उच्चरित होता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए–

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

(क) लिपि का महत्त्व

उत्तर–किसी भाषा के वर्णों तथा उससे बनने वाले शब्दों का सही लिखित रूप हमें उस भाषा की लिपि की जानकारी देता है। लिपि के दो पक्ष होते हैं–

(1) ध्वनियों का लेखन (वर्ण-व्यवस्था) तथा

(2) शब्दों का लेखन (वर्तनी-व्यवस्था)।

हर भाषा में भाषिक ध्वनियों के अनुसार लिपि चिह्न बनाए जाते हैं, जिन्हें वर्णमाला कहा जाता है। लेखन के स्तर पर इसी वर्णमाला की सार्थक ध्वनियों से शब्द बनते हैं। इन शब्दों का लेखन ही वर्तनी व्यवस्था है। परंपरा से प्राप्त वर्णमाला में समय-समय पर वर्णों की संख्या में वृद्धि होती रहती है। विदेशी भाषा से ग्रहण किए गए शब्दों की ध्वनियाँ यदि भाषा में नहीं होतीं, तो नए वर्ण निर्मित करने की आवश्यकता पड़ती है। जैसे अंग्रेजी शब्द जब हिंदी में आए, तो 'O' ध्वनि को व्यक्त करने के लिए (ऑ) वर्ण बनाया गया। उदाहरणार्थ–बाल–बॉल, हाल–हॉल, काफी–कॉफी इनमें से क्रमशः पहले जोड़े का अर्थ सिर के बाल–गेंद, हालचाल वाला हाल–बड़ा-सा कमरा, बहुत-सा या पर्याप्त पीने का पदार्थ कॉफी इत्यादि है, जिनमें से एक का भी सम्बन्ध आपस में नहीं बैठता अर्थात बिल्कुल नयी अर्थ-व्यंजनाएँ उद्घाटित होती हैं।

ऐसे ही देवनागरी लिपि में क, ख, ग, ज़, फ आदि ध्वनियाँ अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों के आने के कारण आईं, फिर लेखन में इनकी आवश्यकता पड़ी, क्योंकि इन ध्वनियों के बहुत-से शब्द हिंदी में आए और उसी में घुल-मिल गए, जैसे–खाना (भोजन)-खाना (अलमारी का ख़ाना), सजा (सजा हुआ)–सज़ा (दंड) इत्यादि वर्ण एक नुक्ता (.) लगाते ही नयी अर्थ व्यंजनाएँ देने लगते हैं। यथा–

I	II
कॉफी (पर्याप्त)	कॉफी (पीने की)
ताक (देखना)	ताक (दीवार का आला)
फन (साँप का)	फन (हुनर)
बाग (लगाम)	बाग (बगीचा)
बाल (सिर के)	बॉल (गेंद)

उच्चारण के स्तर पर क्योंकि एक शब्द को कई रूपों में उच्चरित किया जा सकता है, इसलिए भाषा में स्थिरता लाने के लिए लेखन का सहारा लिया जाता है, क्योंकि जब लिखा जाता है तो शुद्ध वर्तनी के रूप में इसका एक ही रूप सामने आता है, जैसे–'स्टेशन' को अस्टेशन, इस्टेशन, सटेशन इत्यादि किसी भी रूप में बोल दिया जाता है, पर लिखा 'स्टेशन' ही जाता है।

जब किसी मौखिक भाषा को लिपि के सहारे से लिखा जाता है, तो उच्चरित भाषा ही उसका आधार बनती है। प्रारम्भ में, वर्णों को स्थिर करने में कुछ समय लगता है। जहाँ वर्णों का स्वरूप निश्चित हो चुका होता है, वहाँ एकरूपता की समस्या पर ध्यान देना आवश्यक होता है। देवनागरी के झ, ण, अ आदि के आकार आज, म्र, भ्र, रा से बिल्कुल भिन्न हैं। आधुनिक यांत्रिक उपकरणों (टाइपराइटर, कंप्यूटर) के आने से कुछ वर्णों के लिखने के ढंग में परिवर्तन किया गया है, जैसे–ट्ट–ट्ट, न्न–न्न, प्त–प्त द्व–द्व।

वर्तनी क्योंकि लिपि चिह्नों का ही अनुसरण करती है, इसलिए वर्तनी के स्तर पर अनेकरूपता देखी जा सकती है, जैसे–झंडा–भंडा–झण्डा–भण्डा।

हर भाषा की अपनी व्यवस्था होती है, अंग्रेजी में हमेशा व्यंजन के बाद स्वर आते हैं, वर्तनी भी इसी व्यवस्था के अनुसार चलती है, जबकि हिंदी में स्वर चिह्न (ा, ि, ी, ु, ू, े, ै) व्यंजन के आगे, पीछे, ऊपर तथा नीचे लगाए जाते हैं।

लिपि तथा वर्तनी एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं, क्योंकि

(1) हर भाषा में लिपि-चिह्न तो सीमित होते हैं, लेकिन उनसे असंख्य शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। वर्तनी उनके स्वरूप को स्थिर करती है।

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

(2) जैसे सार्थक ध्वनियाँ लिपि चिह्नों के रूप में अंकित की जाती हैं, वैसे ही हर भाषा की वर्तनी व्यवस्था उसके लिपि चिह्नों पर आधारित होती है।

(3) लिपि का बोध वर्णों के माध्यम से होता है तथा वर्तनी का बोध इन वर्णों से बनने वाले शब्दों से।

(ख) लहजा या अनुतान

उत्तर–सुरलहर अथवा अनुतान– "अनुतान या सुरलहर सुरों के उतार–चढ़ाव या आरोह–अवरोह का क्रम हैं जो एकाधिक ध्वनियों की भाषिक इकाई के उच्चारण में सुनाई पड़ता है। "सुर, तंत्रियों के कम्पन के कारण उत्पन्न एक ध्वनि गुण हैं, जो स्वर – तंत्रियों के प्रति सेकेण्ड कम्पनावृति पर निर्भर करता हैं। सुर किसी एक ध्वनि का होता हैं। किंतु जब हम एक से अधिक ध्वनियों की कोई इकाई (शब्द, वाक्यांश, वाक्य) का उच्चारण करते हैं तो हर ध्वनि का सुर प्रायः अलग–अलग होता है, इस प्रकार सुरों के उतार – चढ़ाव की लहर बनती हैं, जिसे सुरलहर या अनुतान कहते हैं।

स्वर – तंत्रियों के प्रति सेकेण्ड कम्पन के अतिरिक्त अनुतान का सम्बन्ध बलाघात से भी हैं। ये मिल कर निम्न काम करते हैं :-

1. वाक्यों के समूह को वाक्यों में, वाक्यों को उपवाक्य तथा पदबन्ध में और पदबन्ध को और छोटी–छोटी इकाइयों में तोड़ते हैं।

2. अभिव्यक्ति को उत्तर, सामान्य कथन, आज्ञा द्योतक, प्रश्न बोधक तथा अनिच्छा द्योतक आदि बनाते हैं।

3. अभिव्यक्ति के विभिन्न भावों या अंशों को अर्थ के धरातल पर आपस में सम्बन्ध करते हैं।

जैसे–

राम गया। (सामान्य कथन)

राम गया? (प्रश्न)

राम गया! (आश्चर्य)

सुर के उतार–चढ़ाव के लिये 1, 2, 3 का प्रयोग कर इसे इस प्रकार दिखाया जा सकते हैं।

1. निम्न सुर, 2. सामान्य सुर, 3. उच्च सुर।

मकान अच्छा है। (सामान्य कथन) 231

राम आ गया? (प्रश्न) 233

राम आ गया क्या? (प्रश्न) 232

राम आ गया! (आश्चर्य) 123

(ग) ध्वनियों और शब्द

उत्तर–ध्वनियां और शब्द–हिन्दी की वर्णमाला में मूलतः कुल 44 वर्ण हैं, इस कारण हम कह सकते हैं कि हिन्दी में लगभग 44 ध्वनियां हैं। कुछ नई ध्वनियां भी जुड़ गई हैं। कहा जाता है कि हिन्दी में 3-4 लाख शब्द हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि मात्र 40–50 ध्वनियों से 3 या 4 लाख शब्द कैसे बना पाते हैं, इसे जानने के लिए यह आवश्यक होगा कि हम यह देखें कि ध्वनियों से शब्द का निर्माण कैसे होता है। भाषा के शब्द ध्वनियों से निर्मित होते हैं। एक शब्द में एक ध्वनि हो सकती है, जैसे–आ, ए (संबोधन के लिए जैसे ए लड़के!) या एक शब्द में कई ध्वनियां हो सकती हैं। दो शब्दों में हम अन्तर कैसे करते हैं; जैसे–हम 'बोलना' शब्द का प्रयोग करते हैं, तो दूसरा व्यक्ति उसे 'खोलना' या 'डोलना' क्यों नहीं समझता? कारण तो स्पष्ट ही है। क्योंकि हर ध्वनि का उच्चारण अलग है। इसी कारण हम ध्वनियों को अलग-अलग पहचानते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि शब्दों के निर्माण में हम इन्हीं ध्वनियों के अंतर का उपयोग करते हैं। किसी शब्द में कम-से-कम एक ध्वनि को बदलकर उसके स्थान पर दूसरी ध्वनि रखते हैं, तो अर्थ में अंतर आ जाता है और भिन्न शब्द बन जाता है। नीचे दिए गए शब्दों को देखिए, हर जोड़े के दो शब्दों में एक ध्वनि बदलती है और उस कारण भिन्न शब्द दिखाई पड़ता है। क्या आप बता सकते हैं कि दोनों शब्दों में अर्थ-भेद पैदा करने वाली ध्वनि कौन-सी है?

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

कमल	जाग	लदान
कमर	झाग	लगान
कूल	खोलना	जाति
कुल	खौलना	जाती

आपने खुद अनुभव किया होगा कि इन शब्द-युग्मों में एक ध्वनि के बदलने के कारण शब्द का रूप बदल जाता है और उसका अर्थ बदल जाता है। हम कह सकते हैं कि शब्द भाषा के अर्थ को वहन करने वाला खंड है और इन खंडों का निर्माण एक या अधिक ध्वनियों से होता है। इस कारण हर दो शब्दों के बीच में कम-से-कम एक ध्वनि में परिवर्तन होना चाहिए, तभी हम दोनों शब्दों को अलग कर सकेंगे। ध्वनियों की शब्द-रचना में इस विशेषता को अर्थभेदकता कहते हैं यानी अर्थ में भेद या अंतर करने का गुण हैं; जैसे–मगर एक प्राणी है, और 'मगर' का दूसरा अर्थ है 'लेकिन'। ऐसे शब्दों को बहुअर्थी शब्द कहते हैं। यहां 'मगर' के दोनों उच्चारणों में कोई अंतर नहीं है, बल्कि एक ही शब्द दो अलग अर्थ देता है। ऐसा अर्थ के संदर्भ के कारण होता है।

भाग–2 (इकाई 5 से 8 पर आधारित)

प्रश्न 4. भाषण की शैलीगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–भाषण की शैलीगत विशेषताएँ–लेखन की भाषा और बोलचाल या भाषण की भाषा में फर्क होता हैं। भाषण अगर पहले से लिखा हुआ नहीं है तो वक्ता को बोलते हुए ही अपनी वाक्य रचना करनी होती है, इसलिए भाषण में लिखित गद्य की तरह लंबे, मिश्रित और जटिल वाक्य नहीं होते, वरन् छोटे-छोटे वाक्य होते हैं, जो कई उपवाक्यों से मिलकर बनते हैं। वक्ता अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए, बात पर बल देने के लिए और लोगों को प्रभावित करने के लिए कभी एक ही शब्द या वाक्य को कई रूपों में दोहराता है, या वह पूरे मंतव्य को ऐसे छोटे-छोटे उपवाक्यों में बांटकर बोलता है, जिससे बात पर अधिक बल पड़े। वक्ता सुनने वालों को अपनी बातों में शामिल करने के लिए उन्हें प्रत्यक्ष संबोधित करता है, श्रोताओं के अलग-अलग वर्गों का अलग-अलग जिक्र करता है, उनसे सीधे अपील करता है।

पुनरावृत्ति

भाषण में अपनी बात को स्पष्ट करने और उस पर बल प्रदान करने के लिए वक्ता बातों की पुनरावृत्ति करता है; जैसे–

1. यह 15 अगस्त का दिन भारतवर्ष के लिए इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इस दिन हमने एक नया पन्ना पलटा। उक्त वाक्य के रेखांकित वाक्यों में, 'आज का दिन', 'इस दिन' में कथन की पुनरावृत्ति है, जो अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त हुई है, साथ ही इसमें बात पर भी बल पड़ा है।
2. आज भी यह उतना ही जरूरी है कि हमारे अंदर निडरता आए। हम गलतियों से न डरें, परिवर्तन से न डरें।
3. भाषण में पुनरावृत्ति के लिए वक्ता एक ही शब्द के कई पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग भी करता है, जिससे कि बात पर बल पड़े।

प्रजातंत्र हर व्यक्ति को एक हक देता है, एक बड़ा हक, एक बड़ा अधिकार और उसको सफल बनाने के लिए कर्त्तव्य का भार भी आता है।

(इस वाक्य में हक और अधिकार पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग बल देने के लिए किया गया है।)

इस तरह पुनरावृत्ति के लिए वक्ता शब्द वाक्यांश या वाक्य को दुहराता है, या बात का विस्तार करता है, पर्यायवाची शब्दों (हक, अधिकार) का प्रयोग करता है।

वाक्य-क्रम

भाषण की भाषा लिखित भाषा की तरह अधिक सुगठित नहीं होती। उसमें वक्ता अपनी बातों को बोलते हुए क्रम देता है, इसलिए भाषण की भाषा कुछ अव्यवस्थित होती है। उसमें शब्दों और पदों का क्रम भी लिखित भाषा से प्रायः अलग होता है।

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

उदाहरण–हमारे जो प्रश्न हैं, वे बहुत बड़े हैं, लेकिन ऐसे नहीं हैं कि जो हिम्मत से काबू नहीं कर सकें उन पर।

हिन्दी के वाक्यों में प्राय: पहले कर्ता, फिर कर्म और अंत में क्रिया रखते हैं; जैसे–"राम स्कूल जाता है।" यहाँ 'राम' कर्ता, 'स्कूल' कर्म और 'जाता है' क्रिया है।

उपर्युक्त वाक्य हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से सही नहीं है, किंतु बोलते हुए भाषा का इस रूप में प्रयोग दोष नहीं माना जाता, वरन् प्राय: इस तरह की वाक्य रचना बात के प्रभाव को बढ़ाती है। उदाहरण में दिये गये वाक्य के अंतिम उपवाक्य में 'उन पर' जो सर्वनाम है, क्रिया के बाद प्रयुक्त हुआ है। सही वाक्य क्रम होगा– हमारे जो प्रश्न हैं, वे बहुत बड़े हैं, लेकिन ऐसे नहीं है कि उन पर हिम्मत से काबू नहीं किया/पाया जा सके।

उदाहरण–आज बनाने का दिन है, भारतमाता के नये जीवन का, न कि तोड़ने का दिन।

इस वाक्य में क्रिया, 'बनाने' कर्म 'भारतमाता के जीवन' से पहले प्रयुक्त हुई है।

सही क्रम–आज भारतमाता के नये जीवन को बनाने का दिन है न कि तोड़ने का।

उपवाक्य

भाषण में वाक्य-रचना इस तरह की जाती है, जिससे कथ्य स्पष्ट होता चला जाए और बात पर बल भी पूरा पड़े, ताकि सुनने वाले प्रभावित हों। इसके लिए वक्ता उपवाक्यों का अधिक उपयोग करता है। शब्दों के ऐसे समूह को जिससे पूरा विचार प्रकट होता है, वाक्य कहते हैं; जैसे–"प्रजातंत्र हर व्यक्ति को ऐ कह देता है।" यह वाक्य है, क्योंकि इसमें शब्दों का ऐसा समूह है, जिससे पूरा विचार प्रकट हुआ है। लेकिन जब कोई पूरा विचार एक से अधिक वाक्यों में प्रकट होता है और उन्हें एक ही वाक्य में प्रस्तुत किया जाता है, तब उनमें से प्रत्येक को उपवाक्य कहते हैं; जैसे–'यह ठीक है कि यह जिम्मेदारी सरकार की है, लेकिन उतनी ही जनता की भी है।' इस वाक्य में दो उपवाक्य हैं–पहला 'यह ठीक है कि यह जिम्मेदारी सरकार की है' दूसरा–(लेकिन) 'उतनी ही जनता की भी है।'

यहाँ यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि बोलने और लिखने, दोनों तरह की वाक्य रचनाओं में उपवाक्यों का प्रयोग होता है, किंतु बोलने की भाषा में उपवाक्यों का प्रयोग बहुत अधिक होता है।

भाषण में ये उपवाक्य पूरी वाक्य रचना में बिखरे होते हैं और अगर हम इन्हें लिखने की भाषा में बदलें तो भाषण में प्रयुक्त वाक्य रचना की तुलना में लिखा हुआ वाक्य छोटा और गठा हुआ होगा।

उदाहरण–भाषण का वाक्य-हमारे कलाकार हैं, लेखक हैं, विचारक हैं, उनकी जिम्मेदारी दूसरी तरह की है और वह जिम्मेदारी है कि नयी पीढ़ी को, सारे देश को मार्गदर्शन दें, सीधे रास्ते पर चलना सिखाएं।

लिखने की भाषा में वाक्य रचना–हमारे कलाकारों, लेखकों और विचारकों की जिम्मेदारी दूसरी तरह की है। वे नयी पीढ़ी और सारे देश को मार्गदर्शन दें और सीधे रास्ते पर चलना सिखाएं।

उदाहरण–भाषण का वाक्य–अपने घर में, अपने गाँव में, अपनी दुकान में, किस तरह से स्वदेशी को बढ़ाएं, अपनी भावना में कैसे स्वदेशी लाएं यह चीज है, ये बड़े उसूल हैं, जिन पर हमको चलना है।

लिखित वाक्य–अपने घर, गाँव, दुकान में किस तरह स्वदेशी की भावना को बढ़ाएं, यही वह उसूल है, जिन पर हमको चलना है।

संबोधित करना

भाषा में वक्ता अपने श्रोताओं के सीधे संबोधित करता है, इसलिए उसकी भाषा संबोधन की भाषा होती है; जैसे–वाक्य कुछ इस तरह से आरंभ होते हैं–"आप जानते हैं कि", "यहाँ पर खड़े होकर".............."हमारे किसान भाई"................"मजदूर भाइयो"....... .."मैं यहां बता देना चाहता हूँ............." आदि। वक्ता कई बार अपने श्रोताओं को अलग-अलग वर्गों में बांटकर उनसे संबंधित बिन्दुओं पर अपने भाषण को केंद्रित करता है। उदाहरण के लिए इस भाषण में किसानों को संबोधित करते हुए अपनी बात निम्नलिखित रूप में आरंभ की गई है–"हमारे किसान भाई, आप हैं देश की बुनियाद, आपकी जनसंख्या सबसे अधिक है.........।" गद्य लिखते हुए हम

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

इस तरह का संबोधन प्रयुक्त नहीं करते। इस तरह के संबोधन से जहाँ वक्ता श्रोताओं से सीधे अपने को जोड़ता है, वहीं उसके वक्तव्य में आत्मीयता और अपील का भाव भी आता है।

प्रश्न 5. निबंध रचना के बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए 'पर्यावरण संरक्षण' पर निबंध लिखिए।

उत्तर–प्राकृतिक कारण जीवाश्म रिकॉर्ड में प्राकृतिक प्रक्रियाओं जैसे ज्वालामुखी, आग और जलवायु परिवर्तन के माध्यम से निवास विनाश को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। एक अध्ययन से पता चलता है कि 300 मिलियन साल पहले यूरामेरिका में उष्णकटिबंधीय वर्षावनों के निवास स्थान के विखंडन से उभयचर विविधता का एक बड़ा नुकसान हुआ, लेकिन साथ-ही-साथ सुखाड़ जलवायु सरीसृपों के बीच विविधता के फटने पर हुई। मानव कारण संपादित करे। अमेजन में वनों की कटाई और सड़कें, अमेजॅन वर्षावन। मनुष्यों के कारण होने वाली पर्यावास विनाश में वनों से भूमि परिवर्तन, कृषि योग्य भूमि, शहरी फैलाव, बुनियादी ढांचा विकास, और भूमि की विशेषताओं में अन्य मानवजनित परिवर्तन शामिल हैं। पर्यावास क्षरण, विखंडन, और प्रदूषण मनुष्यों द्वारा उत्पन्न आवास विनाश के ऐसे पहलू हैं जो आवश्यक रूप से निवास स्थान के विनाश में शामिल नहीं होते हैं, फिर भी निवास स्थान ढह जाते हैं। मरुस्थलीकरण, वनों की कटाई और प्रवाल भित्ति में गिरावट उन क्षेत्रों (रेगिस्तान, जंगलों, प्रवाल भित्तियों) के लिए विशिष्ट प्रकार के आवास विनाश हैं।

प्रश्न 6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए–

(क) संबोधन कारक

उत्तर–सम्बोधन कारक–जिस शब्द से किसी को पुकारा या बुलाया जाए उसे सम्बोधनकारक कहते हैं। इसकी कोई विभक्ति नहीं होती है। इसको पहचानने करने के लिए (!) चिन्ह लगाया जाता है। इसके चिन्ह हे, अरे, अजी आदि होते हैं।

अथवा - जिससे किसी को बुलाने अथवा पुकारने का भाव प्रकट हो उसे संबोधन कारक कहते है और संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है। जैसे – हे राम! यह क्या हो गया।

उदाहरण

हे राम! यह क्या हो गया। - इस वाक्य में 'हे राम!' सम्बोधन कारक है, क्योंकि यह सम्बोधन है।

अरे भैया! क्यों रो रहे हो? - इस वाक्य में 'अरे भैया'! संबोधन कारक है।

हे गोपाल! यहाँ आओ। - इस वाक्य में 'हे गोपाल'! संबोधन कारक है।

सम्बोधन कारक की परिभाषा–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से बुलाने या पुकारने का ज्ञान हो उसे सम्बोधन कहते हैं। अथवा - जहाँ पर पुकारने, चेतावनी देने, ध्यान बटाने के लिए जब सम्बोधित किया जाता है उसे सम्बोधन कारक कहते हैं।

सम्बोधन कारक के उदाहरण

अरे रमेश! तुम यहां कैसे?

अजी! सुनते हो क्या।

हे ईश्वर! रक्षा करो।

अरे! बच्चो शोर मत करो।

हे राम! यह क्या हो गया।

अरे भाई! यहाँ आओ।

अरे राम! बहुत बुरा हुआ।

अरे भाई! तुम तो बहुत दिनों में आये।

अरे बच्चों! शोर मत करो।

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

हे ईश्वर! इन सभी नादानों की रक्षा करना।

अरे! यह इतना बड़ा हो गया।

अजी तुम उसे क्या मरोगे ?

बाबूजी! आप यहाँ बैठें।

अरे राम! जरा इधर आना।

अरे! आप आ गये।

(ख) विलोम शब्द

उत्तर–विलोम शब्द अर्थात विपरीतार्थक शब्द किसी शब्द का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्द को कहते हैं। दूसरे शब्दो में कहा जाए तो एक-दूसरे के विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्द विलोम कहलाते हैं। अत: विलोम का अर्थ है – उल्टा या विरोधी अर्थ देने वाला।

उदाहरण–विलोम शब्दक्र.सं.शब्दविलोम

1.अमृत-विष, 2. आदि-अंत, 3. इच्छा-अनिच्छा, 4. उत्कर्ष-अपकर्ष, 5. एकता-अनेकता 6. औपचारिक-अनौपचारिक 7. क्रय-विक्रय 8.क्रूर-दयालु 9. खेद-प्रसन्नता 10. गर्म-ठंडा 11. घृणाप्रेम 12. चर-अचर 13. छोटा-बड़ा 14. जन्म-मृत्यु 15. न्याय-अन्याय 16. प्यार-घृणा 17.मूक-वाचाल 18. सहयोग-असहयोग 19. हार-जीत 20. हानि-लाभ

प्रश्न 7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाइए–

(i) मानव

(ii) उदार

(iii) एक

(iv) समाज

(v) मास

उत्तर– मानव + ईय = मानवीय

उदार + ता = उदारता

एक + इक = एकैक

समाज + इक = सामाजिक

मास + इक = मासिक

भाग–3 (इकाई 5 से 8 पर आधारित)

प्रश्न 8. हिंदी की सांविधानिक स्थिति का विस्तार से विवेचन कीजिए।

उत्तर–संविधान और राजभाषा–संविधान में कुल 395 अनुच्छेद हैं, जो कुल 18 भागों में हैं तथा भाषा से संबंधित 11 अनुच्छेद और एक पूरा भाग (भाग 17) है, जिससे पता चलता है कि भाषा के प्रश्न को संविधान के निर्माताओं ने कितना महत्त्व दिया है। भाषा से संबंधित अनुच्छेदों के अध्ययन से भाषा के प्रश्न पर विचार किया जा सकता है–

संघ की राजभाषा

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी संघ की राजभाषा होगी, जिसकी लिपि देवनागरी होगी तथा संघ के शासकीय कार्यों के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंकों (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0) का उपयोग किया जाएगा।

इस अनुच्छेद के अनुसार यह व्यवस्था की गई कि संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष तक शासकीय कार्यों में अंग्रेजी का पूर्ववत् उपयोग किया जाता रहेगा, अर्थात 1965 तक, परंतु राष्ट्रपति इस अवधि में (1950 से 1965 तक) अंग्रेजी के अतिरिक्त शासकीय प्रयोगों के लिए हिंदी भाषा तथा देवनागरी अंकों के उपयोग के लिए आदेश दे सकते हैं।

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

इस अनुच्छेद के अनुसार, यह प्रावधान भी किया गया था कि संसद 15 वर्ष की अवधि (1950 से 1965 तक) के बाद भी विधि द्वारा शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का या देवनागरी अंकों का प्रयोग उपबंधित कर सकती है।

तात्पर्य यह है कि राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के आवश्यकतानुसार बने रहने का तथा हिंदी के क्रमिक दायित्व ग्रहण का प्रावधान किया गया था।

प्रदेशों की राजभाषा/राजभाषाएँ

संविधान के अनुच्छेद 345, 346 एवं 347 में राज्यों की राजभाषा तथा संपर्क भाषा की चर्चा की गई है। तीनों अनुच्छेद अध्याय दो में आते हैं। इनका विवरण आगे प्रस्तुत है–

345 अनुच्छेद–राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं–इस अनुच्छेद के अनुसार, अनुच्छेद 346 और 347 के अधीन रहते हुए किसी राज्य का विधानमंडल, कानून द्वारा उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी भाषा को या हिंदी को उस राज्य के सभी या कुछ शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग कर सकेगा, परंतु जब तक राज्य का विधानमंडल कानून द्वारा उपबंध न करे, तब तक राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता रहेगा, जैसे–संविधान बनने के पूर्व होता था।

अनुच्छेद 346–एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्राचार की राजभाषा–संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली प्राधिकृत भाषा एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा राज्य और संघ के बीच पत्राचार की राजभाषा होगी, परंतु यदि दो या अधिक राज्य पत्राचार के लिए राजभाषा हिंदी का करार करते हैं, तो उस स्थिति में हिंदी भाषा का प्रयोग पत्राचार के लिए किया जा सकता है।

अनुच्छेद 345 के अनुसार, राज्य किसी भी भाषा को राजभाषा बना सकता है तथा यह भी महत्त्वपूर्ण बात है कि राज्य चाहे जितनी भाषाओं को राजभाषा की पदवी दे सकता है।

इस अनुच्छेद (346) के उपबंधों के अनुसार यदि राज्य के किसी क्षेत्र में अल्पसंख्यक वर्ग के लोग बसे हों तो उनकी भाषा को उस क्षेत्र में शासकीय प्रयोजनों के लिए स्वीकृति दी जा सकती है, इसका निर्णय केंद्र सरकार नहीं, उस राज्य का विधानमंडल विधि के द्वारा करता है।

ऐसी स्थिति भी हो सकती है कि राज्य का विधानमंडल उस प्रदेश में बोली जाने वाली अन्य भाषा को शासकीय प्रयोजनों के लिए स्वीकार न करे। इस स्थिति में अनुच्छेद 347 में राष्ट्रपति द्वारा समाधान दिया जाता है।

अनुच्छेद 347–किसी राज्य की जनसंख्या के किसी अनुभाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा में विशेष उपबंध–जब राज्य का विधानमंडल प्रदेश की अन्य भाषा को शासकीय प्रयोजनों के लिए स्वीकार नहीं करता, तो राष्ट्रपति यह प्रावधान करते हैं कि जब राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग अपनी भाषा को राज्य की मान्यता दिलाना चाहता है तो ऐसा निर्देश दिया जाता है कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सब क्षेत्रों में या किसी भाग के लिए शासकीय मान्यता दी जाए, लेकिन भाषा संबंधी मान्यता के लिए राष्ट्रपति की कुछ शर्तें होती हैं, जैसे–उस भाषा के बोलने वालों की पर्याप्त संख्या हो और वे माँग करें कि उनकी भाषा को मान्यता दी जाए।

स्पष्ट है कि अनुच्छेद 345 में राज्य के विधानमंडल द्वारा एक या अनेक भाषाओं को राजभाषा के रूप में स्वीकृति देने की चर्चा है तथा अनुच्छेद 347 में जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों की चर्चा है।

प्रदेशों के बीच संपर्क

अनुच्छेद 346 दो राज्यों के बीच की संपर्क भाषा की चर्चा करता है। यहाँ यह प्रश्न भी उठाया जाता है कि क्या दो राज्य अपनी-अपनी राजभाषा (हिंदी या अंग्रेजी से अलग भाषा) में आपस में पत्राचार कर सकते हैं। इस अनुच्छेद के अनुसार, यह संभव नहीं है तथा सभी राज्यों को संघ की राजभाषा में ही पत्राचार आदि कार्य करना होगा। उपर्युक्त व्यवस्था का आधार यह है कि जब दो राज्यों का संपर्क विचार या उनके विवाद आदि केंद्र सरकार के सामने या सर्वोच्च न्यायालय में लाए जाएंगे, तो उन पर पत्राचार या विचार संघ की राजभाषा में किया जाएगा।

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

प्रश्न 9. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए–

(क) संपर्क भाषा

उत्तर–संपर्क भाषा का आधार–किसी देश या समाज की संपर्क भाषा कौन-सी होगी, इसका निर्णय इस बात से होता है कि समाज में रहने वाले ज्यादा से ज्यादा लोग किस भाषा को समझते हैं तथा उसका उपयोग करते हैं। यह जानने के लिए कि कौन-सी भाषा को जानने वालों की संख्या सबसे अधिक है, कोई शासकीय तौर पर सर्वेक्षण या आँकड़े प्रस्तुत नहीं किये जाते, बल्कि वहाँ के जन-सामान्य ही अपनी जरूरतों के हिसाब से उस भाषा को विकसित कर लेते हैं, जिस भाषा से उन्हें ज्यादा से ज्यादा लोगों से संपर्क बनाने में आसानी होती है। यदि उन्हें संपर्क की जरूरतों में परिवर्तन लगता है तथा वे महसूस करते हैं कि मौजूदा संपर्क भाषा उपयुक्त नहीं है व किसी अन्य संपर्क भाषा की जरूरत है, तो वह स्वयं ही उपयुक्त भाषा को चुन लेते हैं। जिस भी भाषा को जन-संपर्क की भाषा के रूप में चुना जाए, उसके लिए यह जरूरी है कि वह भाषा जीवन के विभिन्न कार्य क्षेत्रों में प्रयोग होने वाली भाषा हो, अर्थात विभिन्न प्रकार के धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, व्यापारिक, शिल्पगत, कलापरक, राजनीतिक व आर्थिक जीवन में उसका उपयोग होता हो। बातचीत की भाषा की जरूरत केवल औपचारिक बोलचाल के लिए ही नहीं पड़ती, बल्कि जीवन के सभी जरूरी कार्यों में इसकी जरूरत होती है। जैसे कि व्यापार एवं वाणिज्य, प्रशासन कार्य, सरकार तथा जनता के बीच संपर्क के लिए, सेना व परिवहन व्यवस्था आदि सभी कार्यों के लिए इस भाषा की जरूरत पड़ती है। अखिल भारतीय स्तर पर होने वाले सभी कार्यों पर संपर्क भाषा की जरूरत होती है। इस आधार पर संपर्क भाषा नहीं होनी चाहिए, जिसे सीखने में लोगों को अधिक कठिनाई न हो शिक्षा एवं ज्ञान के लिए भी संपर्क भाषा अत्यंत आवश्यक है। ज्ञान-विज्ञान की सामग्री जिस भाषा में उपलब्ध होगी वही भाषा शैक्षिक संपर्क की भाषा बन पायेगी, इसलिए विश्वविद्यालयों में संपर्क भाषा का ज्ञान दिया जाना जरूरी है। शासन व्यवस्था के संचालन के लिए संपर्क भाषा का बहुत महत्त्व है। प्रशासन कार्य तथा सरकारी कार्यों में प्रयोग की जाने वाली भाषा को राजभाषा कहा जाता है। राजभाषा का दर्जा उसी भाषा को दिया जाता है, जिसे देश के ज्यादा से ज्यादा लोग समझ सकें। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत में केंद्र सरकार ने राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया है। इस तरह से संपर्क भाषा को शासन-व्यवस्था की नियंत्रित नहीं कर सकती। इसका उदाहरण तमिलनाडु में देखा जा सकता है। तमिलनाडु सरकार ने प्रशासन एवं शिक्षा दोनों के स्तर पर भारत सरकार की नीति को लागू नहीं किया है। वहाँ के विद्यालयों मे हिंदी का अध्ययन नहीं कराया जाता। शासकीय स्तर पर हिंदी का बहिष्कार किया जाता है, किंतु संपूर्ण देश से जुड़ने के लिए वहाँ के लोग संपर्क भाषा के ज्ञान की जरूरत महसूस करते हैं तथा विभिन्न संस्थाओं जैसे–दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, केंद्रीय हिंदी निदेशालय आदि के माध्यम से हिंदी सीखते हैं।

(ख) राजभाषा हिंदी का स्वरूप

उत्तर–हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर सन् 1949 को स्वीकार किया गया। इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 352 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

धारा 343 (1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी है। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2, 3 आदि) है।

भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा का उल्लेख नहीं है। संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्य सभा के सभापति महोदय या लोक सभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। संविधान का अनुच्छेद 120 किन प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निदेशों द्वारा निर्धारित किया गया है। स्वीकार किये जाने का औचित्यसंपादित करें

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

हिन्दी को राजभाषा का सम्मान कृपापूर्वक नहीं दिया गया, बल्कि यह उसका अधिकार है। यहां अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है, केवल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा बताये गये निम्नलिखित लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना ही पर्याप्त रहेगा, जो उन्होंने एक 'राजभाषा' के लिए बताये थे-

(1) प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।

(2) उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।

(3) यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।

(4) राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।

(5) उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा बिल्कुल खरी उतरती है।

(1) संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

(2) खण्ड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था, परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का, या (ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश संपादित करें–संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

प्रश्न 10. निम्नलिखित विशिष्ट शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए–

***(i)* बिटकॅइन**

उत्तर–बिटकाइन एक विकेंद्रीकृत डिजिटल मुद्रा है। यह पहली विकेन्द्रीकृत डिजिटल मुद्रा है जिसका अर्थ है की यह किसी केंद्रीय बैंक द्वारा नहीं संचालित होती। कंप्यूटर नेटवर्किंग पर आधारित भुगतान हेतु इसे निर्मित किया गया है। इसका विकास सातोशी नकामोतो नामक एक अभियंता ने किया है। सातोशी का यह छद्म नाम है।

***(ii)* ई–वालेट**

उत्तर–डिजिटल बटुआ (Digital Wallet) वह युक्ति या सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक तरीके से पैसे का लेन-देन कर सकता है।

***(iii)* गुरुत्वाकर्षण**

उत्तर–गुरुत्वाकर्षण (ग्रैविटेशन) एक पदार्थो द्वारा एक दूसरे की ओर आकृष्ट होने की प्रवृति है। गुरुत्वाकर्षण के बारे में पहली बार कोई गणितीय सूत्र देने की कोशिश आइजक न्यूटन द्वारा की गयी जो आश्चर्यजनक रूप से सही था। उन्होंने गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou

GURUIGNOU.COM

का प्रतिपादन किया। न्यूटन के सिद्धान्त को बाद में अलबर्ट आइंस्टाइन द्वारा सापेक्षता सिद्धांत से बदला गया। इससे पूर्व वराह मिहिर ने कहा था कि किसी प्रकार की शक्ति ही वस्तुओं को पृथ्वी पर चिपकाए रखती है।

(iv) **वायुमंडल**

उत्तर–पृथ्वी को घेरती हुई जितने स्थान में वायु रहती है उसे वायुमंडल कहते हैं। वायुमंडल के अतिरिक्त पृथ्वी का स्थलमंडल ठोस पदार्थों से बना और जलमंडल जल से बने हैं। वायुमंडल कितनी दूर तक फैला हुआ है, इसका ठीक ठीक पता हमें नहीं है, पर यह निश्चित है कि पृथ्वी के चतुर्दिक् कई सौ मीलों तक यह फैला हुआ है।

वायुमंडल के निचले भाग को (जो प्राय: चार से आठ मील तक फैला हुआ है) क्षोभमंडल, उसके ऊपर के भाग को समतापमंडल और उसके और ऊपर के भाग को मध्य मण्डल और उसके ऊपर के भाग को आयनमंडल कहते हैं। क्षोभमंडल और समतापमंडल के बीच के बीच के भाग को 'शांतमंडल' और समतापमंडल और आयनमंडल के बीच को स्ट्रैटोपॉज कहते हैं। साधारणतया ऊपर के तल बिलकुल शांत रहते हैं।

(v) **भूगर्भशास्त्र**

उत्तर–पृथ्वी से सम्बंधित ज्ञान ही भूविज्ञान कहलाता है। भूविज्ञान या भौमिकी (Geology) वह विज्ञान है जिसमें ठोस पृथ्वी का निर्माण करने वाली शैलों तथा उन प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनसे शैलों, भूपर्पटी और स्थलरूपों का विकास होता है। इसके अंतर्गत पृथ्वी संबंधी अनेकानेक विषय आ जाते हैं जैसे, खनिज शास्त्र, तलछट विज्ञान, भूमापन और खनन इंजीनियरी इत्यादि।

इसके अध्ययन विषयों में से एक मुख्य प्रकरण उन क्रियाओं की विवेचना है जो चिरंतन काल से भूगर्भ में होती चली आ रही हैं एवं जिनके फलस्वरूप भूपृष्ठ का रूप निरंतर परिवर्तित होता रहता है, यद्यपि उसकी गति साधारणतया बहुत ही मंद होती है। अन्य प्रकरणों में पृथ्वी की आयु, भूगर्भ, ज्वालामुखी क्रिया, भूसंचलन, भूकंप और पर्वतनिर्माण, महादेशीय विस्थापन, भौमिकीय काल में जलवायु परिवर्तन तथा हिम युग विशेष उल्लेखनीय हैं।

■■

For More Solved Assignment Cilck Guruignou.com

Subscribe from Guru Ignou